

◆ महत्वपूर्ण शब्दावली एवं संक्षिप्त व्याख्या

✓ सूरत (मुख्य बंदरगाह) – गुजरात का यह बंदरगाह मुगलों के दौरान सबसे महत्वपूर्ण व्यापारिक केंद्र था, जहाँ से यूरोपीय और एशियाई देशों से व्यापार होता था। इसे "भारत का प्रवेशद्वार" कहा जाता था।

✓ मछलीपट्टनम – आंध्र प्रदेश स्थित यह बंदरगाह विशेष रूप से मसालों और वस्त्र व्यापार के लिए प्रसिद्ध था। डच और ब्रिटिश व्यापारियों का यहाँ बड़ा प्रभाव था।

✓ हुगली – बंगाल में स्थित यह बंदरगाह मुगल काल में यूरोपीय व्यापारियों, विशेष रूप से पुर्तगालियों और ब्रिटिशों का प्रमुख व्यापारिक केंद्र था।

✓ नील – यह एक प्रमुख कृषि उपज थी, जिसका उपयोग वस्त्रों को रंगने के लिए किया जाता था। 17वीं शताब्दी में मुगल भारत से यूरोप को बड़े पैमाने पर निर्यात किया जाता था।

✓ शोरा – यह एक महत्वपूर्ण खनिज पदार्थ (पोटेशियम नाइट्रेट) था, जिसका उपयोग बारूद और औषधियों में किया जाता था। मुगलों ने इसे बड़ी मात्रा में निर्यात किया।

✓ फरमान – मुगल शासकों द्वारा जारी किए गए शाही आदेश, जिनमें व्यापारिक विशेषाधिकार भी दिए जाते थे। अंग्रेजों को जहाँगीर और औरंगजेब ने कर-मुक्त व्यापार के लिए फरमान जारी किए।

✓ सीमा शुल्क (2.5%-5%) – भारतीय व्यापारियों से वसूला जाने वाला कर, जिसे मुगलों ने अपने व्यापारिक राजस्व को बनाए रखने के लिए लागू किया था।

✓ कारवां – थल मार्गों से व्यापार करने वाले व्यापारी समूह, जो ऊँटों, घोड़ों और बैलगाड़ियों से यात्रा करते थे। ये मुख्य रूप से सिल्क रूट और ग्रैंड ट्रंक रोड जैसे मार्गों पर चलते थे।

✓ स्पेन-पुर्तगाल से चांदी का प्रवाह – मुगल काल में भारत के निर्यात की भरपाई के लिए स्पेन और पुर्तगाल से भारी मात्रा में चांदी आती थी, जिससे भारत की मुद्रा व्यवस्था मज़बूत बनी।

✓ मुगल नौसेना की कमजोरी – मुगल साम्राज्य ने थल-सेना पर अधिक ध्यान दिया, जिससे समुद्री मार्गों पर यूरोपीय शक्तियाँ हावी हो गईं। पुर्तगाली, डच, ब्रिटिश और फ्रांसीसी व्यापारियों ने इसका लाभ उठाया और भारतीय समुद्री व्यापार पर नियंत्रण कर लिया।

✓ औपनिवेशिक शोषण – मुगल शासन की गिरावट के बाद यूरोपीय शक्तियों ने भारत के व्यापार पर कब्जा कर लिया और धीरे-धीरे इसे अपने आर्थिक हितों के लिए इस्तेमाल करना शुरू कर दिया, जिससे भारत की आर्थिक निर्भरता बढ़ी और ब्रिटिश उपनिवेशवाद मजबूत हुआ।